हिमाचल प्रदेश की समृद्ध वन सम्पदा

देवी दयार वन : (9000–11000 फुट ऊँचाई क्षेत्र)

प्रदेश के ऊँचाई वाले (लाहौल एवं स्पिति) आदि क्षेत्रों में पाई जाते हैं। इसकी सुगन्धित पत्तियाँ मन्दिर व गोम्पा में पूजा के लिए तथा लकड़ी भवन निर्माण में प्रयोग की जाती है।

रई तोष वन : (7000 से 9000 फुट ऊँचाई क्षेत्र)

प्रदेश के ठण्डे क्षेत्र में होने के कारण इनका विकास बहुत धीमी गति से होता है। यह हिमालय की नाजुक पारिस्थितिकी को संतुलित रखने तथा अनके दुर्लभ वन्यजीवों को पोषित करने में अहम भूमिका निभाते हैं।

देवदार वन : (6000 से 8000 फुट ऊँचाई क्षेत्र)

हिमाचल प्रदेश में ईमारती लकड़ी का मुख्य स्त्रोत। देवताओं के वृक्ष के रूप में अपनी पहचान रखने वाले इस वृक्ष को हिमाचल प्रदेश का राज्य वृक्ष घोषित किया गया है। यह वृक्ष 120 वर्ष में विकसित होता है इसलिए इसकी लकड़ी का उपयोग सोच-समझ कर किया जाना चाहिए।

कायल वन : (5000 से 7000 फुट ऊँचाई क्षेत्र)

प्रदेश के मध्य ऊँचाई क्षेत्रों में देवदार के पश्चात्, इमारती लकड़ी की यह दूसरी प्रमुख प्रजाती है। अच्छी इमारती लकड़ी प्राप्त करने के लिए कायल के वनों को अवैज्ञानिक छाँग तथा आग से बचाना भी आवश्यक हो जाता है।

चीड़ वन : (3000 से 5500 फुट ऊँचाई क्षेत्र)

चीड़ प्रदेश के निचले भागों में पाई जाने वाली प्रमुख प्रजाती है। प्रदेश के ऐसे क्षेत्र जहाँ अन्य प्रजातियाँ नहीं उग पाती, वहाँ यह प्रजाती पर्यावरण संतुलन में मुख्य भूमिका निभाती है। चीड़ से निकलने वाले बिरोजे व चिलारू आग के प्रति अत्यन्त संवेदनशील होते हैं लेकिन इनके विक्रय से किसानों को अतिरिक्त आय भी प्राप्त होती है।

चौड़ी पत्ती वन : (1500 से 6500 फुट ऊँचाई क्षेत्र)

हमारे ग्रामीणों के दैनिक जीवन में चौड़ी पत्ती प्रजातियों के वनों की विशेष भूमिका है। प्रदेश की अधिकतर आबादी अपनी रोजमर्रा की बालन, चारे, फल-फूल, जड़ी-बूटियों व रेशा आदि की आवश्यकताओं के लिए मूलत: इन्हीं पर निर्भर है। अपनी निजी भूमि व उनके आस-पास चौड़ीपत्ती के वृक्ष लगाने से वनों पर पड़ने वाले दबाव को कम किया जा सकता है।

वन विभाग- हिमाचल प्रदेश

प्रचार वन मंडल-शिमला

Pld. by: New Era Graphics, Ph.: 0177-2628276